DIGITAL EDITION
ISSUE NO.19

लोटपोट

हँसी और मस्ती की पाठशाला

51 YEARS ANNIVERSARY

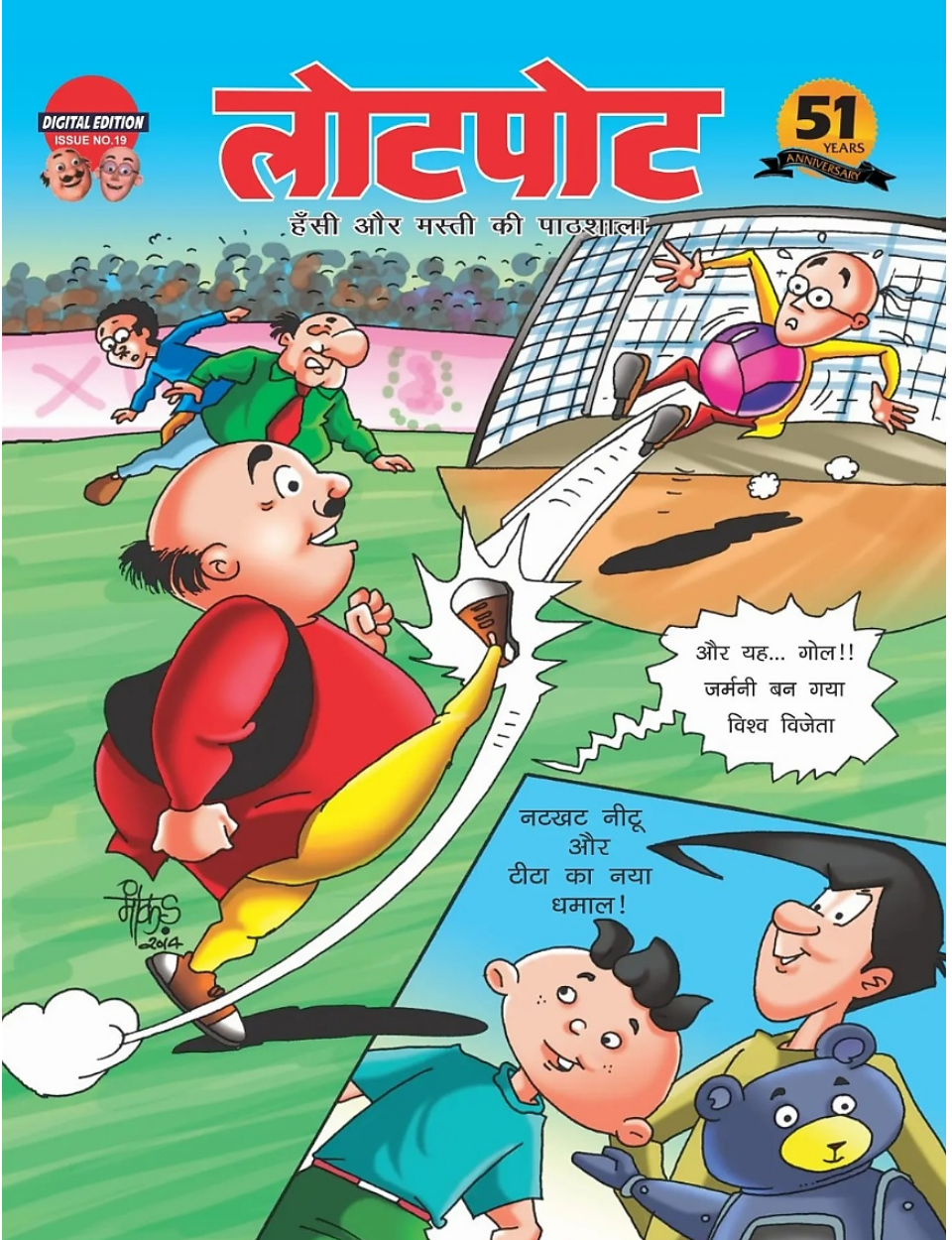

VISIT…

IT'S ALL ABOUT FOOD AND MORE FOOD!

LOOK AT THE PICTURES AND FIND OUT ALL THE NAMES OF FOOD HONEY BUNNY ENJOY HAVING FROM THE JUMBLE AND WRITE YOUR ANSWER IN THE SPACE PROVIDED.

C	Y	A	W	S	H	N	C	Y
P	I	Z	Z	A	Y	J	S	A
I	C	P	S	O	R	E	I	C
T	A	N	S	O	R	L	T	H
B	U	R	G	E	R	L	B	I
P	E	H	R	P	S	Y	P	P
I	C	E	C	R	E	A	M	S

GUESS WHAT'S GOING ON!

THE PICTURES HERE ARE JUMBLED. CAN YOU PUT THEM IN THE RIGHT ORDER TO FIND OUT WHAT HAPPENED? SOLVE THE PUZZLE AND WRITE YOUR ANSWER IN THE SPACE PROVIDED.

CORRECT ANSWER: ☐ ☐ ☐ ☐

© 2021 All rights reserved by Sony Pictures Networks India Private Limited

HONEY BUNNY KA JHOLMAAL
All New Episodes
MON-FRI, 10:00 AM

Visit:
www.lotpot.com

लोटपोट
हँसी और मस्ती की पाठशाला

DIGITAL EDITION
ISSUE NO. 19

बच्चों की कलम से

क्या तुम्हारे पास दिमाग है

एक बार महर्षि रमण के पास एक युवक आया। वह बड़ा ही उद्विग्न और असहज दिखाई दे रहा था। वह स्वामीजी के पास आकर थोड़ी देर तो बैठा रहा फिर संयत होकर बोला, 'स्वामीजी, मेरे मन में अनेक शंकाए उठ रही हैं लेकिन उनका समाधान मुझे नज़र नहीं आ रहा है। क्या आप मेरी शंकाओं का निवारण करेंगे ?'

'अवश्य,' महर्षि ने उत्तर दिया।

उस युवक ने पहला प्रश्न किया, 'इस संसार में इतना घोर अनर्थ कैसे हो रहा है ?'

'यह प्रश्न तुम भगवान से क्यों नहीं पूछते ?' महर्षि ने प्रतिप्रश्न किया।

युवक ने उत्तर दिया, 'मगर मैं उनके पास जाऊं कैसे ? वे दिखाई तो देते नहीं। वास्तव में मुझे उनके अस्तित्व पर ही शंका है।'

'भला ऐसी शंका क्यों है तुम्हें ?' महर्षि ने पुनः उससे प्रश्न किया।

'सीधी सी बात है,' युवक बोला, 'जब तक ईश्वर दिखाई न दे, तब तक कैसे जाना जा सकता है कि ईश्वर भी संसार में विद्यमान है ?'

रमण महर्षि बोले, 'तुम ठीक कह रहे हो, मगर मेरे प्रश्न का जवाब दो, क्या तुम्हारे पास दिमाग है ?' 'अवश्य,' उसने उत्तर दिया।

'मगर मुझे तो वह दिखाई नहीं दे रहा। तब क्या मैं ऐसी धारणा बना लूं कि तुम्हारे पास दिमाग है ही नहीं ? बस, यही बात ईश्वर के बारे में भी है। जिस प्रकार दिमाग के दिखाई न देते हुए भी हम ऐसी धारणा बना लेते हैं कि प्रत्येक मनुष्य के पास दिमाग होता है, उसी प्रकार भगवान के दिखाई न देने पर भी उनके अस्तित्व के बारे में शंका नहीं करनी चाहिए। दुनिया में ऐसी बहुत चीजें हैं जो हमें दिखाई नहीं देती लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उनका अस्तित्व ही नहीं है।' वह युवक इस तर्क से संतुष्ट हो प्रसन्नता से अपने घर लौट गया।

Founder
Lt. Sh. A.P. Bajaj

Chief Editor
P. K. Bajaj

Editor
Aman Bajaj

Joint-Editors
Anushka
Amisha

Editorial Department

Concept Illustration Direction
Harvinder Mankkar

Health Contents
Dr. K. K. Aggarwal
Padamshri & Dr. B.C. Roy National Awards
President Heart Care Foundation of India
Blog: kkaggarwal.com

For Advertising:
Shekhar Chopra
E-mail:
shekhar@mayapurigroup.com

Editorial Address:
LOTPOT FORTNIGHTLY
A-3, Mayapuri, Phase-I,
New Delhi-110064.
Ph.: 28116120, 28117636
Fax.: 91-11-41833139
Email: edit@mayapurigroup.com
Web.: www.mayapurigroup.com

Printed at ARORBANS PRESS,
Shree S. L. Prakshan
A-5, Mayapuri, Phase-I, N.D.110064.
Owner, Publisher, Printer
Parmod Kumar Bajaj
Printing Place:
A-5, Mayapuri, Phase-I, New Delhi-110064.

LOTPOT title is registered with the R.N.I.,Govt. of India. All rights are reserved with publisher for every content published in Lotpot. Nothing should be reproduced in any form without the permission of publisher. All contents published in the Lotpot are work of fiction and any resemblence to people,place etc is purely incidental. Illustrations are based on the imagination of artist and editor and /or publisher are not responsible for it. Editor and publisher may not be in agreement with the opinion of writers over the published contents. If any body has any objection towards any published content, they are welcome to submit the same with the publisher and it will be published as well. All disputes will be subject to the jurisdiction of Delhi only.Rs 4/- surcharge extra for Nepal, Srilanka, Dubai and other Gulf countries.

नटखट नीटू

चित्रांकन एवं कहानी-हरविन्द्र सांकड

यह क्या? तैयार होकर आराम से बैठा है.. बाहर स्कूल बस.. हार्न पर हार्न बजा रही है।
मैं तो तैयार था.. पर अचानक पेट में दर्द होने लगा है।
बहाना नहीं है.. देखो ना.. मैं तैयार भी हुआ..जाना भी चाहता हूं पर... हाय.. सच में दर्द हो रहा है..
यह बहाना सदियों पुराना है.. चुपचाप चलकर बस में बैठ.. वर्ना नीटू आकर डांट लगायेगा..

आज शनिवार है, वैसे भी हाफ डे है... थोड़ी हिम्मत करो..
मै सच कह रहा हूं...बहुत दर्द हो रहा है..
मै आखिरी बार पूछ रहा हूं। वर्ना बस चली गई तो तुम घर पर ही रह जाओगे?
मै सच कह रहा हूं नीटू भैया... आप जाओ.. वर्ना आप को भी देर हो जायेगी.

मुझे पक्का शक है यह नाटक कर रहा है..
अहा!! अब कोई डर नहीं.. बस चली गई..
यह बुरी बात है.. स्कूल ना जाने के लिए झूठ बोला तुमने?
मुझे मालूम है.. पर आप के टेस्ट की तैयारी नहीं थी। अब मुर्गा थोड़ा ही बनना था
बेटा.. मैडम मुर्गा बनाती है।तू क्या जानेगा टैडी डियर।

टीटा घर में खुश हो रहा था कि वो टेस्ट से बच गया। पर उस दिन स्कूल में टीचर डे था जिसके कारण पढ़ाई हुई ही नही। बल्कि सब बच्चों को खेल खिलाये गये और मिठाई भी खाने को दी गई।
रसगुल्ले तो बहुत स्वादिष्ट थे
क्याऽऽ..आप सबको मिठाई मिली.. मै घर में बैठा रह गया
जो बच्चे बहाना बनाते है या झूठ बोलते है उनके साथ ऐसा ही होता है। कभी भी पढ़ाई से बचने के लिए ऐसे झूठ बहाने नहीं बनाने चाहिए।
मुझे माफ कर दो नीटू भैया.. आगे से ऐसा नहीं करूंगा। और दिल लगाकर पढ़ाई किया करूंगा।

बाल कहानी

हीरालाल की कहानी

हीरालाल महज दस वर्ष का था जब उसके माता पिता का देहांत हो गया था। एक दिन उसके माता पिता खेतों में काम कर रहे थे तो बिजली की चपेट में आ गए थे। वह एक ज़मींदार के लिए काम करते थे और हीरालाल के माता पिता के गुजरने के बाद ज़मींदार को छोटे लड़के पर दया आ गई। अब हीरालाल ज़मींदार के परिवार के साथ रहता था जो उसे खाना देते थे और बड़े घर के एक कोने में सोने की जगह देते थे। ज़मींदार की पत्नी वैसे तो अच्छी औरत थी लेकिन फिर भी वह हीरालाल से काम करवाना नहीं भूलती थी। उसे वह घर के सभी काम करने का हुक्म देती थी। हालांकि हीरालाल भी काम करने से पीछे नहीं हटता था क्योंकि उसे एक दिन में तीन समय का खाना मिलता था और वह तब आराम कर सकता था जब ज़मींदार का परिवार आराम करता था। इसलिए हीरालाल बड़बड़ाता नहीं था।

दो साल बाद ज़मींदार ने देखा कि हीरालाल हट्टा कट्टा हो गया है और उसने सोचा कि अब वह उससे खेतों में काम ले सकता है जहां पर उसने उसके माता पिता के निधन के बाद दो लोगों को काम पर रखा था। ज़मींदार ने एक आदमी को हटाते हुए हीरालाल को दूसरे आदमी की मदद करने के लिए कहा। अब हीरालाल को लगा कि उसे बिना किसी आराम के सुबह से शाम तक काम करना पड़ेगा और सिर्फ ज़मींदार की पत्नी द्वारा दिया गया खाना खाने के लिए समय दिया जाएगा।

खेतों में काम करने वाला दूसरा कर्मचारी आलसी था और वह थोड़ी थोड़ी देर बाद बड़े पेड़ की छाव में जाकर बैठ जाता था और पान खाता रहता था। जैसे जैसे दिन निकले आदमी लेटकर सोने लगा और उसने आदत बना ली की हीरालाल काम करे और वह आराम करे। हीरालाल ने अपना काम जारी रखा। उसने सोचा कि ज़मींदार को आदमी की शिकायत लगाने से कोई फायदा नहीं है। लेकिन उसने फैसला किया कि वह ज़मींदार के साथ घर पर नहीं रहेगा और सिर्फ खेत में काम करेगा। वह कहीं और जाकर अकेला रहेगा। तो एक दिन उसने अपने कपड़ों को बांधा और ज़मींदार के पास गया। ज़मींदार को अलग कपड़ों में देखकर हैरान था क्योंकि हीरालाल ने काम करने वाले कपड़े नहीं पहने थे जो वह खेतों मे जाने से पहले पहनता था। ज़मींदार ने हीरालाल के कंधे पर कपड़ों की गठड़ी भी देखी।

उसने हीरालाल से पूछा, 'क्या हुआ? तुम कहा जा रहे हो हीरालाल?' ज़मींदार को शक था कि उसके खेत पर रहते हुए हीरालाल को दूसरा काम कैसे मिल गया। हीरालाल ने कहा, 'बाबू जी मै आपका शुक्रिया करता हूं कि आपने पांच सालों तक मेरी देख रेख की। अब मुझे खुद के लिए कुछ करना है। मै कभी नहीं भूलूंगा कि आपने मेरे लिए क्या क्या किया।' 'वह ठीक है, लेकिन हीरालाल मुझे यह बताओ कि तुम जा कहा रहे हो?' ज़मींदार ने पूछा।

'मालिक, मै बनारस जाना चाहता हूं और वहां जाकर कुछ काम ढूंढूगा। मुझे पता चला है कि बनारस इस गांव के मुकाबले एक बड़ा शहर है और वहां काम ढूंढना मुश्किल नहीं है।'

तो हीरालाल बनारस के लिए निकल गया और वहां जाकर उसने अपनी पसंद का काम ढूंढा और पूरी मेहनत के साथ काम करके खुश रहने लगा। अब उस पर किसी का भी भार नहीं था।

माँ की ममता

जब मैं छोटी बच्ची थी
माँ की प्यारी दुलारी थी
माँ तो हमको दूध पिलाती,
माँ भी कितनी भोली भाली।
मक्खन मिश्री घोल खिलाती
बड़े मजे से गोद में सुलाती,
माँ तो कितनी अच्छी है
सारी दुनिया उसमें है।

चंदामामा

चंदामामा ठहरो थोड़ा,
कहाँ चले तुम जाते हो?
खेल रहे क्या आंख मिचौली
बादल में छिप जाते हो?
मुझे बुला लो मैं देखूंगा
कितने हो छिपने में तेज़
नहीं पकड़ पाओगे मुझको
मैं दौड़ूंगा तुमसे तेज़।

बाल कहानी

अपने डर की वजह से पीछे मत हटो

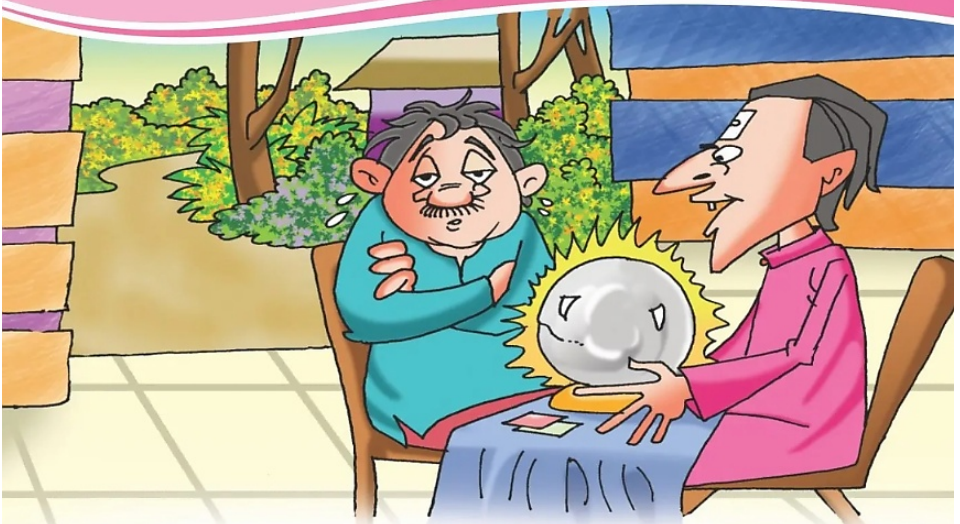

एक बार एक आदमी ज्योतिषी के पास गया। वह देखना चाहता था कि ज्योतिषी उसके भविष्य के बारे में क्या कहेगा। ज्योतिषी ने अपने जादुई गेंद में देखकर आदमी की तरफ देखा। उस ज्योतिष के चेहरे के हावभाव सब कुछ बयां कर रहे थे। उसने आदमी को बताया कि उस आदमी की मृत्यु एक बस हादसे में होगी और यह घटना दो से तीन महीने के समय में होगी लेकिन वह सही समय के बारे में नहीं बता सकता। आदमी दुखी होकर घर गया। उसने खुद से घबराते हुए कहा कि मैंने भविष्यावाणी या ज्योतिषी पर कभी विश्वास नहीं किया तो अब मैं यह विश्वास कैसे कर लूं?

जब दो महीने बीत गए तो उसे ज्योतिषी की बात याद आई और दिन रात वह उस बात के बारे में सोचता रहा। अब उसने फैसला किया कि वह अपने घर के अंदर खुद को बंद कर लेगा और वहां पर अगले महीने तक कोई बस आसपास नहीं आएगी।

तीन हफ्ते बीत गए और आदमी अपने कमरे की सीढ़ियों से नीचे आया ताकि वह कॉफी ले सके। उसके छोटे बच्चे ने अपने खिलौनों को ज़मीन पर छोड़ा हुआ था और वह खिलौना एक छोटी बस थी। आदमी का पैर बस पर पड़ गया और जब उसने आखिरी सीढ़ी पर कदम रखा तो वह फिसल गया और उसका सिर जाकर सीढ़ियों की रैलिंग पर लगा और उसकी मौत हो गई।

कहानी का उपदेश- ज़िंदगी का कोई भरोसा नहीं होता, इसलिए डरकर खुद को दुनिया से अलग नहीं करना चाहिए और हर दिन कुछ अच्छा काम करना चाहिए।

रीटा- तुम्हें पता है हमारे बेटे सोनू ने चलना भी शुरू कर दिया है।
राजेश- अच्छा, कब से?
रीटा- दस दिन हो गए।
राजेश- अरे! तो उसे पकड़ो। अब तक तो बहुत दूर निकल गया होगा शैतान।

आइस्क्रीम तीलियों से फोटो फ्रेम

सामग्री–

1.आइस्क्रीम की तीलियां,
2. गोंद,
3. रंग,
4. मोटी तार,

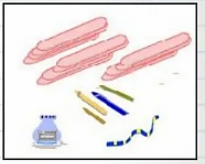

हम जिस इंसान को सबसे ज़्यादा पसंद करते है उसे हम अपने पास कैसे रखते है? हम उनकी फोटो को फोटो फ्रेम में लगाकर अपने पास रखते है ताकि हम उनको देख सकें। कितना मज़ा आएगा अगर हम खुद फोटो फ्रेम बनाए तो और इन्हें बनाना काफी आसान भी है।

विधि–

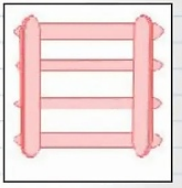

आइस्क्रीम की करीब 15 तीलियां इक्ट्ठी करें। फ्रेम का बेस बनाने के लिए चित्र के अनुसार आइस्क्रीम की तीलियों को जोड़ें।

हर साइड से आधा इंच जगह छोड़ें और फ्रेम का ऊपरी हिस्सा बनाने के लिए चार तीलियां ऊपर से चिपकाएं।

तीलियों के बीच की खाली जगह में से फोटो डाले।

अब एक मोटी तार ले और उसका लूप बना ले। लूप के दोनों आखिरी हिस्सों को फ्रेम के पीछे लगाए। अब आप अपना फोटो फ्रेम टांग भी सकते है।

आप अपने फोटो फ्रेम को और भी आकर्षक बनाने के लिए उसपर अलग-अलग डिज़ाइंस बना सकते है।

बाल कहानी

छोटी बातों के लिए पसीना मत बहाओ

एक दिन समय प्रबंधक का एक्सपर्ट छात्रों के एक समूह से बातचीत कर रहा था तो अपनी बात को साबित करने के लिए उसने एक ऐसे उदाहरण के बारे में सोचा जो छात्र कभी ना भूल पाए। जब वह बेहद होशियार छात्रों के समूह के आगे खड़ा हुआ तो उसने कहा, 'ठीक है, अब समय एक पहेली का है।' फिर उसने एक गैलन लिया, एक बड़े मुंह वाला मर्तबान लिया जिसका ढक्कन टाइट हो और इन दोनों चीज़ों को उसने अपने सामने एक टेबल पर रख दिया। फिर उसने एक दर्जन मुट्ठी जितने आकार के पत्थर लिए और एक एक करके मर्तबान में डालने शुरू किए। जब मर्तबान ऊपर तक भर गया और उसमें कोई पत्थर नहीं जा पा रहा था तो उसने छात्रों से पूछा, 'क्या मर्तबान भर चुका है?'

हर किसी छात्र ने कहा, 'हां'। फिर उसने पूछा, 'सच्ची में भर चुका है?' अब इस बारी छात्रों ने कहा, 'शायद नहीं।' फिर प्रबंधक ने कहा, 'शाबाश।' इसके बाद उसने मेज़ के नीचे से एक बोरी मिट्टी की निकाली। उसने मर्तबान में मिट्टी डालनी शुरू की। मिट्टी पत्थरों के बीच में बची जगह से रास्ता बनाते हुए मर्तबान में इक्ट्ठा होती गई। अब दोबारा प्रबंधक ने पूछा कि क्या मर्तबान भर चुका है? तो सभी छात्रों ने चिल्लाकर जवाब दिया, 'नहीं।' एक बार फिर प्रबंधक ने कहा, 'शाबाश।' फिर उसने एक पानी का जग निकाला और मर्तबान में डालना शुरू किया जब तक पानी ऊपर तक नहीं भर गया। फिर उसने छात्रों के तरफ देखते हुए कहा, 'अब मुझे बताओ कि इस पहेली का मतलब क्या है?' एक उत्सुक छात्र ने अपना हाथ उठाया और कहा, 'इसका मतलब है कि बेशक आपके पास कितना भी काम क्यों ना हो लेकिन अगर आप थोड़ी कोशिश करेंगे तो आप थोड़े और कामों को अपनी ज़िंदगी में शामिल कर सकते है।'

प्रबंधक ने जवाब सुनकर कहा, 'नहीं, इसका यह मतलब नहीं है। यह उदाहरण सिखाता है कि अगर तुम पहले बड़े पत्थर नहीं डालोगे तो तो तुम उसे बाद में कभी नहीं डाल सकोगे। तुम्हारी ज़िंदगी में बड़े पत्थर क्या है?'

'आपके बच्चे, आपके माता पिता, आपका परिवार, आपकी पढ़ाई, आपके सपने, एक अच्छा काम, दूसरों को सिख्या देना, वह काम करना जो आपको पसंद है, अपने लिए समय निकालना, आपका स्वास्थय।'

इसलिए याद रखे कि पहले अपनी ज़िंदगी के बड़े पत्थरों के लिए जगह बनाए, नहीं तो आप इन्हें कभी नहीं समेट पाएंगे। अगर आप छोटी चीज़ों के पीछे पसीना बहाएंगे तो आप अपनी ज़िंदगी में छोटी चीज़ों को लेकर परेशान रहेंगे जो आपके लिए महत्वपूर्ण नहीं है। आपको कभी भी अपनी ज़िंदगी के बड़े और महत्वपूर्ण चीज़ों के लिए समय नहीं मिल सकेगा। इसलिए जब भी रात को या सुबह आप यह कहानी पढ़े तो अपने आपसे पूछिए कि आपकी ज़िंदगी में बड़ी चीज़ें कौन सी है और उन्हें पहले समेटने की कोशिश करे।

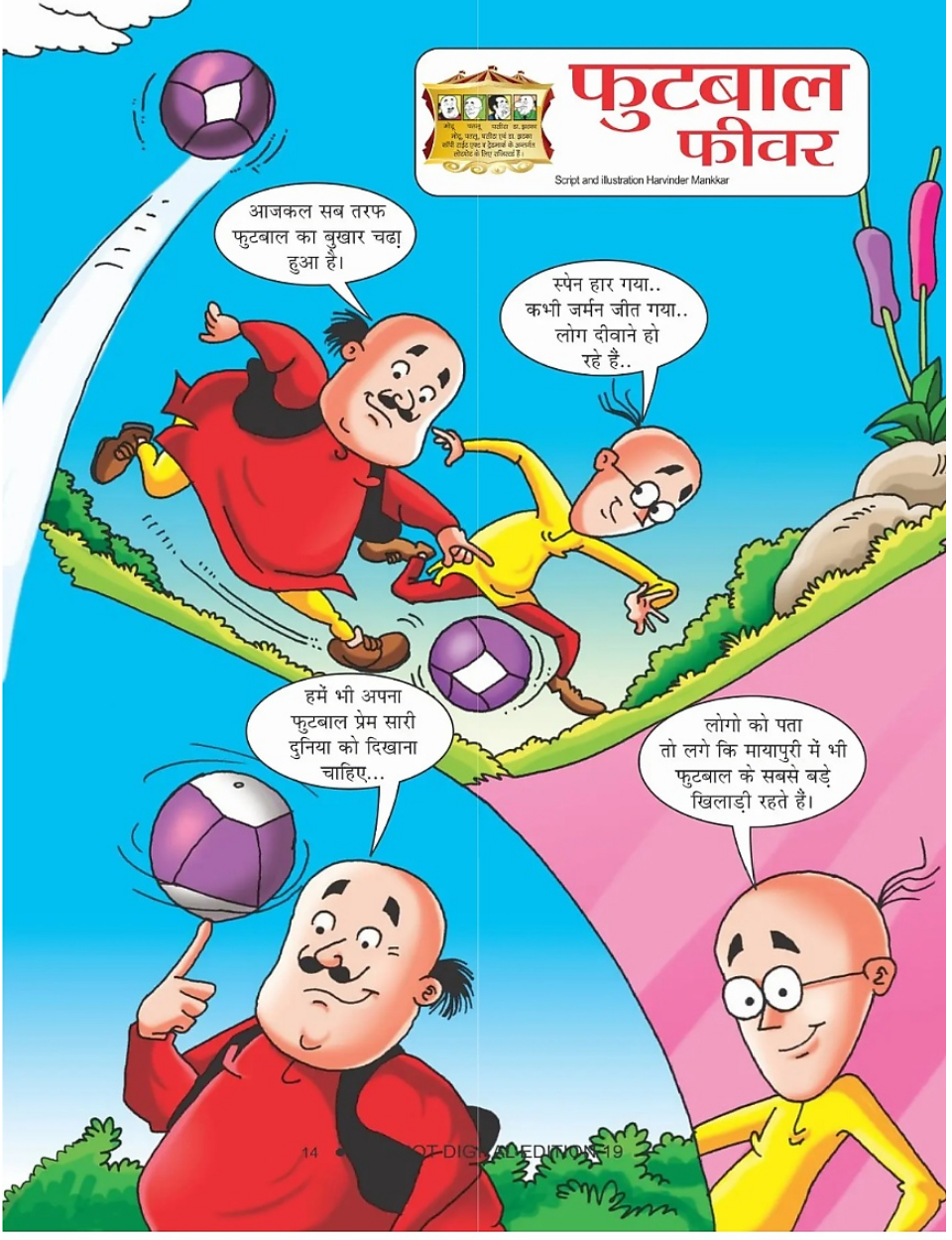
फुटबाल फीवर
Script and illustration Harvinder Mankkar
आजकल सब तरफ फुटबाल का बुखार चढ़ा हुआ है।
स्पेन हार गया.. कभी जर्मन जीत गया.. लोग दीवाने हो रहे हैं..
हमें भी अपना फुटबाल प्रेम सारी दुनिया को दिखाना चाहिए...
लोगो को पता तो लगे कि मायापुरी में भी फुटबाल के सबसे बड़े खिलाड़ी रहते हैं।

मोटू किक मारने के लिए तेजी से फुटबाल की तरफ बढ़ रहे हैं..
और यह लगाई उन्होने, रोनेल्डो से भी बेहतर शाट... फुटबाल गोली की तरह उड़ चली है..
और फुटबाल ने सीधा जाकर पहलवान डोगा की कार पर गोल कर दिया..
छनाक!!
ओये!! मेरी कार!!

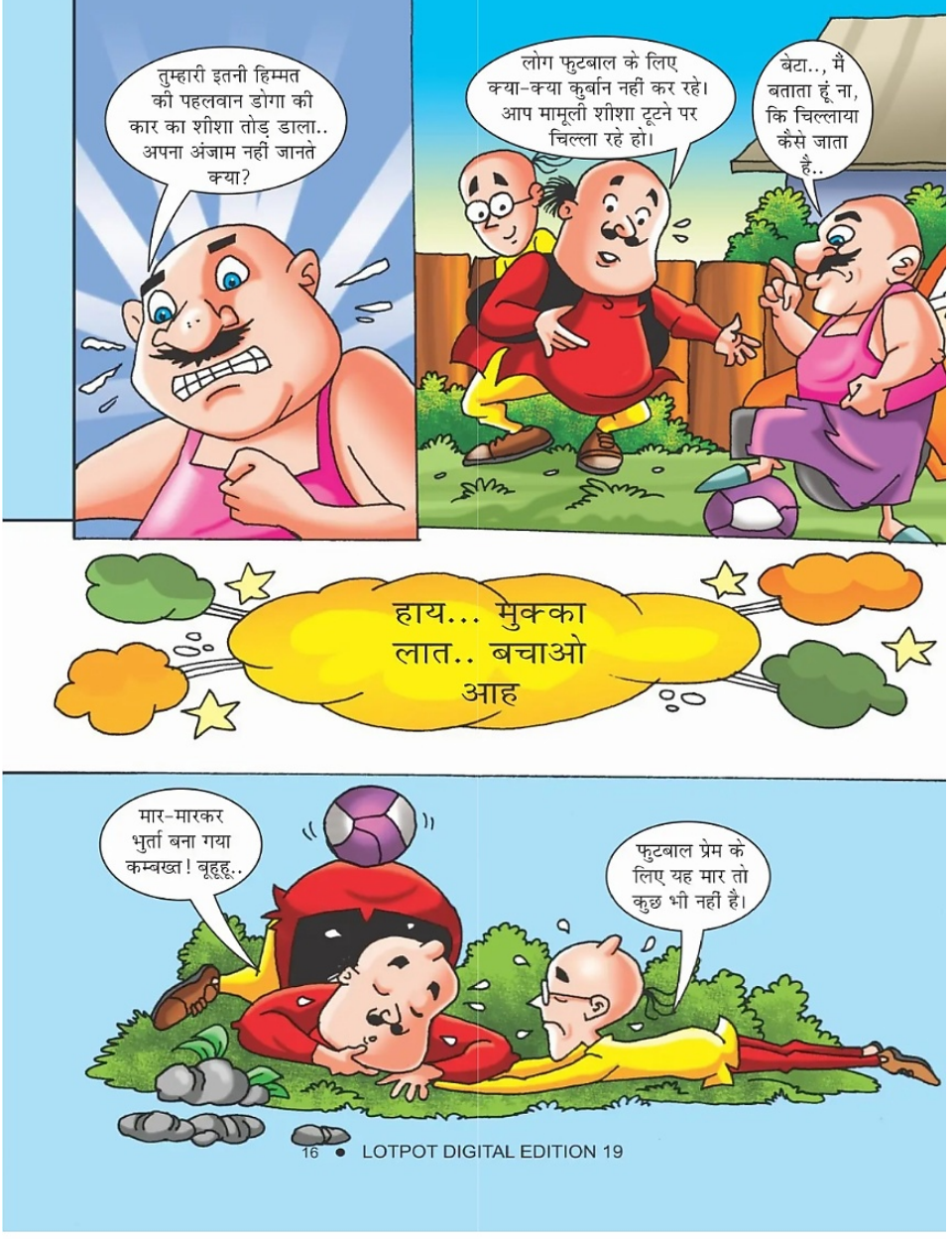
तुम्हारी इतनी हिम्मत की पहलवान डोगा की कार का शीशा तोड़ डाला.. अपना अंजाम नहीं जानते क्या?
लोग फुटबाल के लिए क्या-क्या कुर्बान नहीं कर रहे। आप मामूली शीशा टूटने पर चिल्ला रहे हो।
बेटा.., मैं बताता हूं ना, कि चिल्लाया कैसे जाता है..
हाय... मुक्का लात.. बचाओ आह
मार-मारकर भुर्ता बना गया कम्बख्त! बूहूहू..
फुटबाल प्रेम के लिए यह मार तो कुछ भी नहीं है।

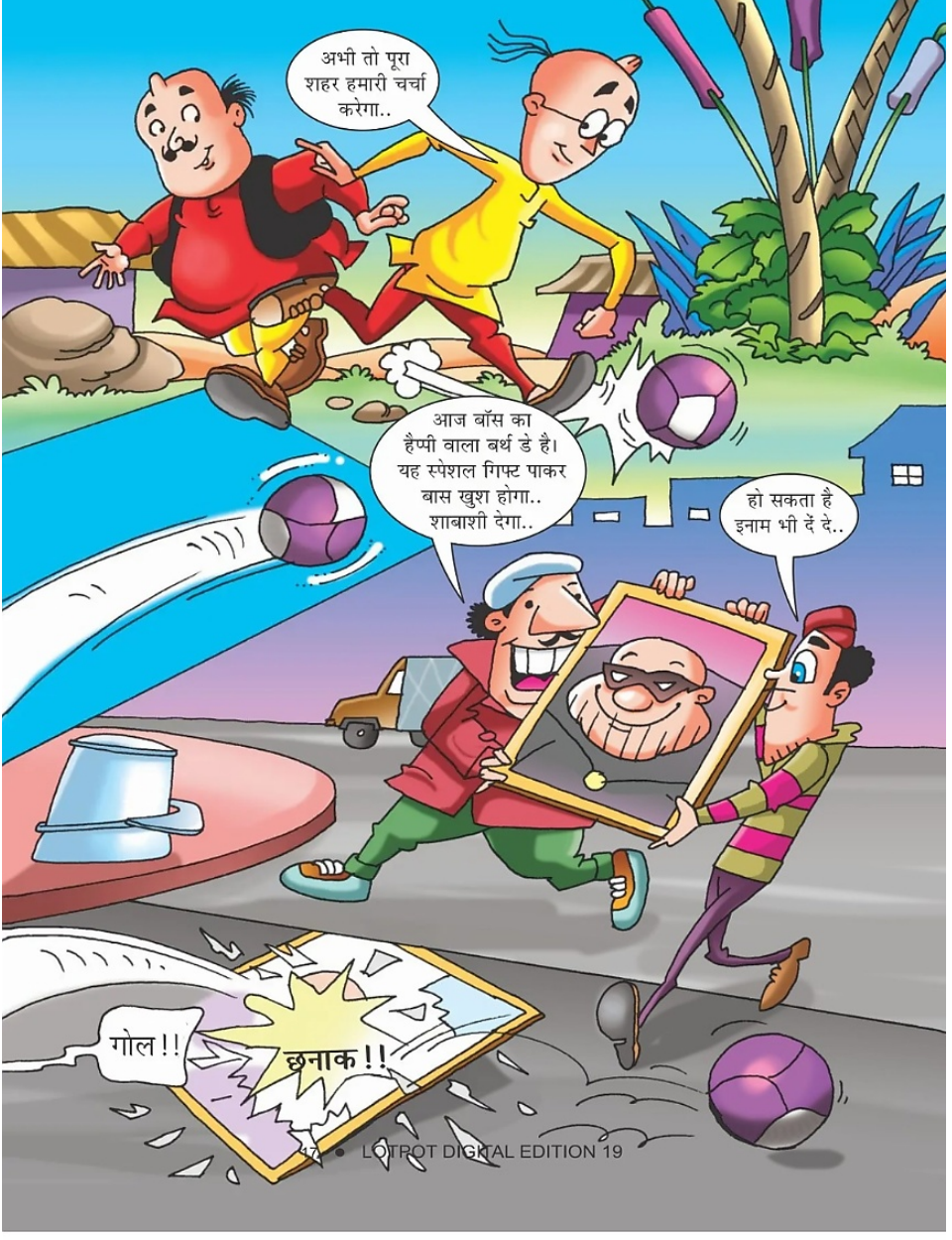
अभी तो पूरा शहर हमारी चर्चा करेगा..
आज बॉस का हैप्पी वाला बर्थ डे है। यह स्पेशल गिफ्ट पाकर बास खुश होगा.. शाबाशी देगा..
हो सकता है इनाम भी दें दे..
गोल!!
छनाक!!

तुम्हारी यह मजाल! हमारा गिफ्ट तोड़ डाला गुर्रर्..
फुटबाल तुम्हारे बास से बढ़कर है..
बॉस का क्या है.. एक गया, दस आ जायेंगे..
हमारा बास, शहर का डान है मूर्खो.. उसकी फोटो को तोड़कर तुमने अपनी शामत बुला ली है।
लगता है फुटबाल फीवर हमें नुकसान पहुंचाने वाला है..
पर हम हार नहीं मानेंगे। फुटबाल खेलते रहेंगे। जब तक फाइनल गोल नहीं हो जाता.
हाय बचाओ उईऽऽ आह..

यह लगी फाईनल किक..
चांद के पार ना चली जाये हमारी फुटबाल?
आज फीफा 2014 का फाईनल मैच है.. बस नाश्ता करके मजे से टी.वी पर पूरा मैच देखेगें..
स्पेशल नाश्ता तभी तो बनाया है..
मेरा तो दिल था स्टेडियम में बैठकर LIVE मैच देखूं। फुटबाल को छू कर देखूं।
कई बार इच्छा पूरी होने में देर नहीं लगती..
यह फुटबाल कहां से आ गई?
सीधी स्टेडियम से आई लगती है...

इतने खुशकिस्मत नहीं हो तुम!
यह तो हमारी फुटबाल है.. जो पूरे शहर में चर्चा का विषय बनी हुई है।
यानि हमारे नाश्ते का सत्यानाश तुमने किया है?
मैंनं इतने यत्न से नाश्ता बनाया था और तुमने सारा मिट्टी में मिला दिया..गुर्रर्र
यार...फुटआल के लिए इतनी कुर्बानी तो चलती है..
तो फिर थोडी कुर्बानी तुम भी दे दो.. पता तो चले कितने बड़े फुटबाल प्रेमी हो.
लात घूंसा..
थप्पड़..
हाय..
बचाओ..
ईऽऽ उऽऽ

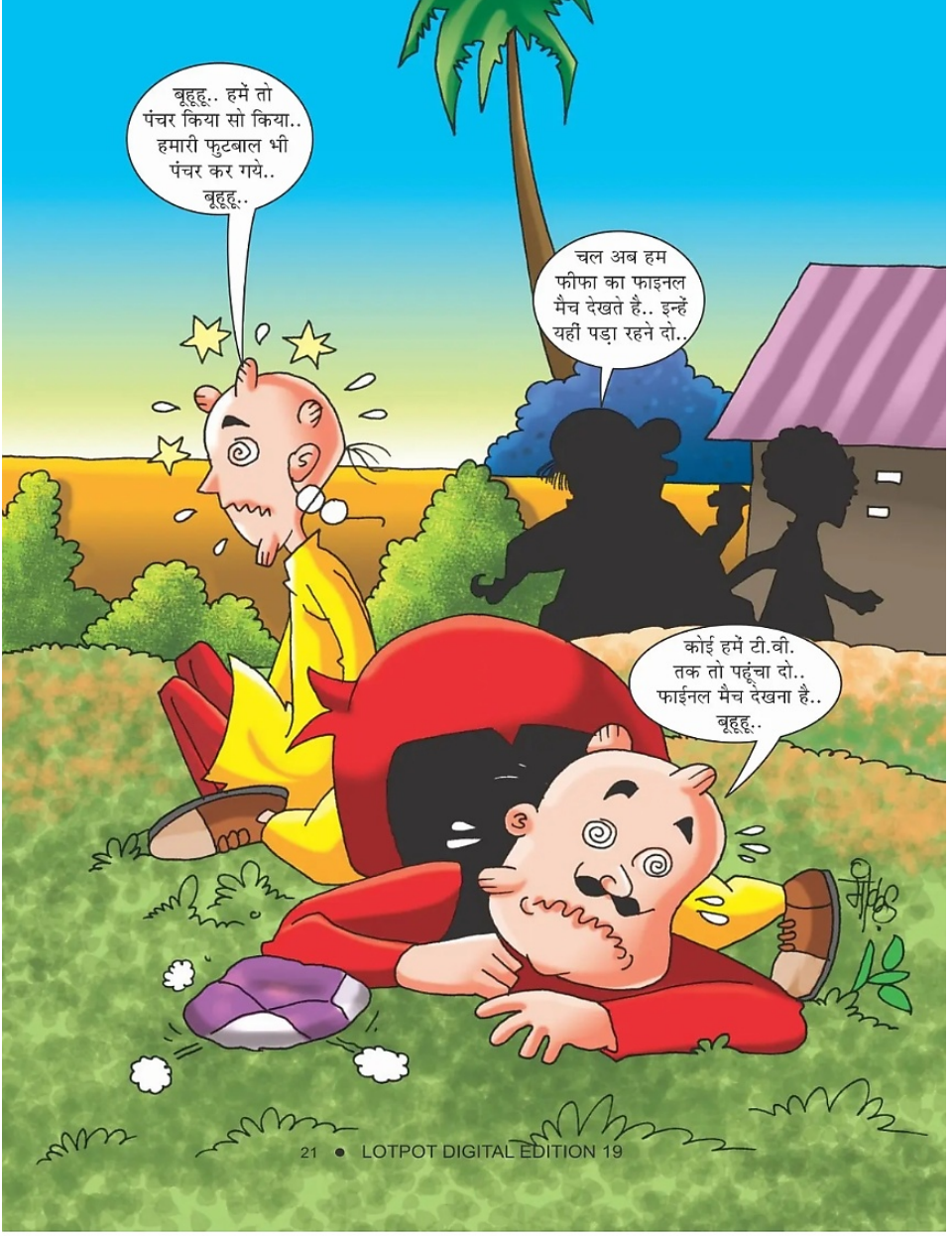
बूहहू.. हमें तो पंचर किया सो किया.. हमारी फुटबाल भी पंचर कर गये.. बूहहू..
चल अब हम फीफा का फाइनल मैच देखते है.. इन्हें यहीं पड़ा रहने दो..
कोई हमें टी.वी. तक तो पहुंचा दो.. फाइनल मैच देखना है.. बूहहू..

बाल कहानी

चूहों की एकता का पाठ

उस समय सबसे ज़्यादा ठंड थी। कई जानवर ठंड की वजह से मर गए थे। इन हालातों को देखते हुए कांटेदार चूहों ने फैसला किया कि वह एक टीम की तरह रहेंगे और एक साथ होकर खुद को गरमी देंगे। इस तरह से उन्होंने खुद को ढक लिया और खुद को ठंड से बचाने की कोशिश की। लेकिन इस दौरान दूसरे चूहों के फर वाले कांटे एक दूसरे को लग रहे थे जिससे काटेदार चूहों को आपस में चोट लग रही थी।

कुछ समय बाद उन्होंने फैसला किया कि वह एक दूसरे से कुछ दूरी पर रहेंगे। ऐसा करते ही एक एक करके चूहे ठंड की वजह से मरने लगे। फिर उन्होंने सोचा कि या तो वह दूसरे चूहों के कांटों को सहे या फिर धरती से मरने के लिए तैयार रहे। एक साथ सभी ने फैसला किया कि वह इक्ट्ठे होकर रहेंगे। उन्होंने अपने साथी चूहों के साथ रहकर छोटी मोटी चोटों को सहना सीख लिया ताकि एक दूसरे से उन्हें गरमी मिलती रहे और वह ठंड का सामना करके जिंदा रह सके।

अच्छा रिश्ता वह नहीं होता जो परफेक्ट लोगों को एक दूसरे के करीब लाता है बल्कि जब हर मनुष्य एक दूसरे की कमज़ोरियों को अपनाकर एक साथ रहकर दूसरे की अच्छी बातों को अपनाता है, वही सही रिश्ता निभाता है।

पत्नी- जहाँ भी मैं पैसे रखती हूँ, टोनी चुरा लेता है। मैं क्या करूँ?
पति- तुम आइंदा से पैसे उसकी नोटबुक में रखा करना। मैं शर्त लगाता हूँ, पैसे सुरक्षित रखे रहेंगे, क्योंकि नोटबुक वह छूता तक नहीं।

बाल कहानी

आम का पेड़

एक समय की बात है एक बहुत बड़ा आम का पेड़ था। एक छोटा लड़का हर रोज़ उस पेड़ के पास आता था और उसे उस पेड़ के साथ खेलना बहुत पसंद था। वह पेड़ के ऊपर चढ़ जाता था और आम तोड़कर खाता था और खेलकर थक जाने के बाद वह उसकी छांव में सो जाता था। उसे पेड़ से बहुत प्यार था और आम का पेड़ उस लड़के को भी बहुत प्यार करता था और उसके साथ खेलता था।

इसी तरह समय निकलता गया। छोटा लड़का अब बड़ा हो गया और वह पेड़ के साथ नहीं खेलता था। एक दिन वह लड़का उस पेड़ के पास वापिस लौटा और उसके मुंह पर उदासी छाई हुई थी। पेड़ ने लड़के को कहा, 'आओ, मेरे साथ खेलो।'

लड़के ने जवाब दिया, 'अब मै बच्चा नहीं हूं। अब मै पेड़ के साथ नहीं खेलूंगा। अब मुझे खिलौने चाहिए और उन्हें खरीदने के लिए पैसे चाहिए।' पेड़ ने जवाब दिया, 'मेरे पास पैसे तो नहीं है...लेकिन तुम मेरे आम तोड़कर बाज़ार में बेच सकते हो और उसे बेचने पर तुम्हें पैसे मिल जाएंगे।'

लड़का उत्साहित हो गया। उसने पेड़ से सभी आम उतारे और वहां से खुशी खुशी चला गया। वह लड़का वापिस नहीं आया। पेड़ उदास हो गया। एक दिन वह लड़का वापिस आया और अब वह एक आदमी बन चुका था। पेड़ उसे देखकर बहुत उत्साहित हुआ। पेड़ ने कहा, 'आओ और मेरे साथ खेलो।'

आदमी ने कहा, 'मेरे पास खेलने के लिए समय नहीं है। मुझे अपने परिवार के लिए काम करना है। हमें रहने के लिए घर चाहिए। क्या तुम मेरी मदद कर सकते हो?' पेड़ ने जवाब दिया, 'मुझे माफ करना, मेरे पास घर नहीं है। लेकिन तुम मेरी शाखाएं काटकर अपना घर बना सकते हो।' इसलिए आदमी ने पेड़ की शाखाएं काटी और खुशी खुशी चला गया। पेड़ उस आदमी को खुश देखकर खुश हुआ लेकिन आदमी उसके बाद वापिस नहीं आया। पेड़ दोबारा अकेला हो गया और उदास हो गया।

एक दिन गर्मी के दिन वह आदमी वापिस आया और उसे देखकर पेड़ फिर खुश हो गया। पेड़ ने कहा, 'आओ, मेरे साथ खेलो।' आदमी ने कहा, 'मै उदास हूं और बूढ़ा हो रहा हूं। मै खुद को आराम देने के लिए दूर जाना चाहता हूं और खुश रहना चाहता हूं। क्या तुम मुझे एक किश्ती दे सकते हो?' पेड़ ने जवाब दिया, 'मेरे तने का इस्तेमाल करके खुद के लिए किश्ती बना लो। फिर तुम उसमें बैठकर दूर जा सकते हो और खुश रह सकते हो।'

आदमी ने पेड़ का तना काटकर किश्ती बना ली और वह उसमें बैठकर दूर चला गया और काफी लंबे समय तक वापिस नही आया। आखिरकार कई सालों बाद आदमी दोबारा पेड़ के पास आया और इस बार पेड़ ने उसे कहा, 'मेरे बच्चे, मुझे माफ करना। मेरे पास तुम्हें और कुछ देने के लिए नहीं है। मेरे पास आम भी नहीं है।'

आदमी ने जवाब दिया, 'मेरे पास आम खाने के लिए दांत नहीं बचे हैं।' पेड़ ने कहा, 'अब मेरे पास तना नहीं है जिस पर तुम चढ़ सको।' आदमी ने कहा, 'मै बूढ़ा हो चुका हूं और मै अब आप पर नहीं चढ़ सकता।' पेड़ ने उदास होते हुए कहा, 'मै अब तुम्हें कुछ नहीं दे सकता। मेरे पास सिर्फ मेरी मरती हुई जड़े बची है।' आदमी ने जवाब दिया, 'मुझे अब कुछ नहीं चाहिए। सिर्फ आराम करने के लिए जगह चाहिए। इन सालों में अब मै थक चुका हूं।' पेड़ ने जवाब दिया, 'अच्छी बात है। पुराने पेड़ों की जड़े आराम करने के लिए सबसे उम्दा जगह होती है। आओ मेरे साथ बैठ जाओ और आराम कर लो।'

आदमी बैठ गया और पेड़ मुस्कुराने लगा।

उपदेश- इस कहानी में पेड़ हमारे माता पिता की तरह है। जब हम बच्चे होते है तो हम उनके साथ खेलते है। जब हम बड़े हो जाते है तो हम उन्हें छोड़ जाते है और तभी लौटते है जब हमें उनकी ज़रूरत होती है। हमारे माता पिता हमारे लिए अपनी ज़िंदगी कुर्बान कर देते है।

पुन्नूजी, बेटे के साथ चीनी लेने दुकान पर पहुँचे। दुकानदार बोला: चीनी तो आउट ऑफ स्टॉक है।
बेटे ने पूछा- पापा, आउट ऑफ स्टॉक का क्या मतलब होता है?
पुन्नू जी ने बताया- बेटा जब कोई चीज़ मौजूद नहीं होती तो उसे आउट ऑफ स्टॉक कहा जाता है।
दोनों घर पहुँचे तो किसी ने बाहर से पुन्नू जी को आवाज़ दी।
पुन्नू जी ने बेटे से कहा- कह दे पापा घर में नहीं है।
पुन्नूजी के बेटे ने बाहर जाकर कहा- अंकल! मेरे पापा आउट ऑफ स्टॉक है।

खूबसूरती के टिप्स

सुंदर होंठों के लिए हमें विनम्रता भरे शब्द बोलने चाहिए।
खूबसूरत आंखों के लिए हमेशा अच्छे लोगों की तलाश करो।
एक पतले शरीर के लिए अपना खाना किसी भूखे के साथ बांटो।
आकर्षक बालों के लिए अपने बालों को किसी बच्चे की उंगलियों के साथ खेलने दे।
संतुलन के लिए हमेशा ज्ञान के साथ चले, आप कभी अकेला महसूस नहीं करेंगे।
अपनी ज़िंदगी से किसी को बाहर ना निकाले। याद रखो कि जब कभी आपको किसी की मदद की ज़रूरत होगी, तो आप खुद को अकेला नहीं पाएंगे।

जब आप बड़े होते जाएंगे तो आपको महसूस होगा कि आपके दो हाथ है, एक खुद की मदद करने के लिए और दूसरा दूसरे लोगों की मदद करने के लिए। महिलाओं की खूबसूरती उन कपड़ों में नही है जो वह पहनती है या किस प्रकार के बाल वह बनाती है। महिलाओं की खूबसूरती हमेशा उनकी आंखों में दिखाई देती है क्योंकि उसी के जरिए आप उनके दिल में बस सकते है जहां पर प्यार होता है। महिलाओं की खूबसूरती उसके चेहरे से नहीं बल्कि उनकी असली खूबसूरती उनकी आत्मा से झलकती है।
उनकी दूसरों को प्यार करने की आदत, दूसरों के लिए काम करने की आदत, उनका जुनून और खूबसूरती समय के साथ बढ़ती जाती है।

ऑस्प्रे

जंगल

अंटार्कटिक महादेश को छोड़कर ऑस्प्रे लगभग सभी महादेश में पाया जाता है। यह पक्षी मछलियों को बड़े चाव से खाता है। इसे सी हॉक भी कहा जाता है, क्योंकि मछली की तलाश में यह समुद्र के आस-पास ही मंडराता रहता है। यहाँ तक कि यह अपने घोंसले भी समुद्र के किनारे ही बनाता है। यह लगभग छह फीट लंबा होता है। ऑस्प्रे का ऊपरी हिस्सा भूरे रंग का होता है और इसके नीचे के हिस्से और पंखों पर काले धब्बे होते है। ऑस्प्रे अपने पैरों तथा पंजों की खास बनावट के कारण अलग अंदाज़ में अपना शिकार करता है। ऑस्प्रे के पैर में पाँच अंगूठे होते हैं, जिनमें चार एक समान लंबाई के तथा एक अंगूठा बाहर की ओर उल्टी दिशा में होता है। इसके अलावा, इसके पंजे सुई की तरह नुकीले होते हैं, जो शिकार के शरीर पर मज़बूत पकड़ बनाने में मदद करते हैं। ऑस्प्रे अकसर अपने से दोगुनी बड़ी मछलियों का शिकार करता है। लेकिन कभी-कभी शिकार करने के क्रम में जब यह बड़ी मछलियों को पकड़ता है तो उनका अधिक वज़न होने के कारण खुद समुद्र में डूब जाता है और तुरंत उसकी मौत हो जाती है।

पंकी- मम्मी, मम्मी! आपके सिर में दो सफेद बाल भी है। ये बाल क्यों आ गए मम्मी?

मम्मी- जो बच्ची, अपनी मम्मी को जितना तंग करती है, मम्मी के उतने ही बाल सफेद हो जाते है। समझी?

पिंकी- हूँ...तभी मै सोचू, नानी के सिर के पूरे ही बाल क्यों सफेद हो गए।

बाल कहानी

समझौता

एक बार की बात है। नंदन वन के घने जंगलों के बीच एक मीठे पानी का तालाब था। जंगल का राजा शेर वहां प्रतिदिन टहलने आता था और उस तालाब का मीठा पानी पीता था। ऐसे ही एक दिन जब शेर उस तालाब की ओर घूमता हुआ निकला तो वहां एक सुअर को देखकर दंग रह गया। सुअर उस मीठे तालाब का पानी मज़े से पी रहा था। शेर गुस्से में दहाड़कर चीखा- अबे ओ गंदे सुअर। तेरी इतनी हिम्मत कि मेरे तालाब का पानी तू पी जाए। अभी तुझे मजा चखाता हूँ। मेरे सिवाय इस तालाब का पानी कोई भी नहीं पी सकता। 'तू कौन है?' शेर की दहाड़ सुनकर सुअर भी सतर्क हो गया और जवाब देते हुए बोला- शेर भाई ज़्यादा घमंड मत कर। इस तालाब का पानी सभी जंगली जानवरों के लिए है। वो जमाना गया जब सब जानवर तुम से डरते थे। अब तुमसे कोई डरने वाला नहीं है। हम सबने ही तुम्हें राजा बनाया है।

'मै इस जंगल का सबसे ताकतवर प्राणी हूँ इसलिए राजा हूँ। तुझे एक मिनट में धूल चटा सकता हूँ।' शेर गुर्राता हुआ सुअर के सामने आ गया। 'चल हो जाए दो-दो हाथ सुअर शेर को चुनौती देते हुए बोला देखें कौन जीतता है।' अब इतना सुनकर शेर के सब्र का बांध टूट गया। उसने अपने दोनों दांतों और नुकीले पंजों से सुअर पर झपट्टा मारा। सुअर कीचड़ में सना था। शेर के मुँह में गंदा बदबूदार कीचड़ भर गया। उसके पंजे कीचड़ से फिसल गए। उसने दोबारा फिर हमला किया तो और भी कीचड़ मुँह के भीतर चला गया। शेर को कीचड़ की बदबू से उबकाई सी आने लगी। उसे लगा कि यदि उसने और हमला किया तो वह उल्टी कर देगा। अब शेर को सहमता देख सुअर ने भी हमला बोल दिया। सुअर ने भागकर दो तीन टक्कर अपने सिर से दे मारी। टक्कर खाकर शेर को चक्कर आने लगा।

अब शेर को अपनी हार तय लगने लगी। उसने तुरंत बदलते हुए सुअर से कहा- 'सुअर भाई तुम इतने नाराज़ न हो तालाब हम सबका है। आज से हम दोनों इस तालाब का पानी पिया करेंगे।'

हम दोनों नहीं, 'हम सब पीएंगे' सुअर शेर को समझाते हुए बोला। ठीक है भाई शेर ने हां में हां मिलाई और उस दिन के बाद उस मीठे तालाब का पानी सभी जानवर पीने लगे।

शिक्षा:- सुअर ने शेर को चुनौती देकर हरा दिया और सभी जानवरों को पानी के लिए दूर नहीं जाना पड़ता।

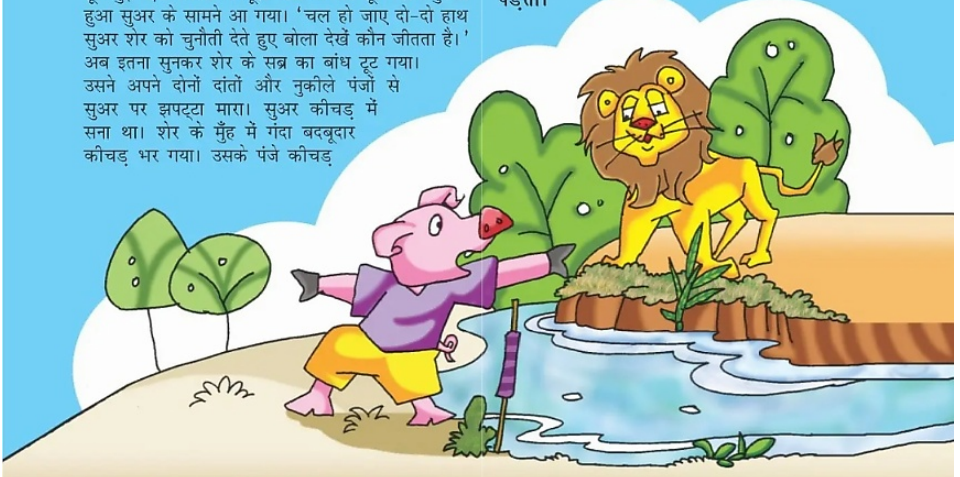

बाल कहानी

जो अच्छा काम तुम करोगे वह तुम्हारे पास वापिस आएगा

एक बार की बात है एक महिला जब भी अपने परिवार के सदस्यों के लिए रोटियां बनाती थी तो वह राह में गुज़रने वाले किसी भी शख्स के लिए भी रोटी बनाया करती थी। वह उस रोटी को खिड़की की चौखट पर रख देती थी ताकि कोई भी उसे ले जाया करे। हर रोज़ एक कुबड़ा मनुष्य आता था और रोटी लेकर चला जाता था। महिला का आभार प्रकट करने के बजाए वह यह शब्द कहता था, 'जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा और जो अच्छा काम तुम करोगे वह तुम्हारे पास वापिस आएगा।' यह सिलसिला कई दिनों तक चलता रहा। हर रोज़ कुबड़ा मनुष्य आता, रोटी उठाता और वही शब्द कहकर चला जाता। महिला को इससे चिढ़ होने लगी। उसने खुद से कहा, 'यह तो आभार के लिए एक शब्द भी नहीं कहता।'

नीता– क्या सचमुच कार्ड के आधार पर भविष्यवाणी की जा सकती है?
पप्पू – हाँ, बिल्कुल! मेरी मम्मी की ही मिसाल लो। वे मेरा रिजल्ट कार्ड देखकर आराम से बता देती हैं कि शाम को घर आने के बाद मेरे पापा मेरी हड्डियों के साथ क्या सलूक करेंगे।

हर रोज़ यह कुबड़ा मनुष्य आता और अपने शब्द कहकर चला जाता। एक दिन महिला बहुत गुस्से में आ गई और उसने कहा, 'इसके शब्दों का मतलब क्या है?' उस महिला ने उस आदमी से बदला लेने के बारे में सोचा। उस महिला ने एक रोटी बनाई जिसमें उसने ज़हर मिला दिया। जैसे ही वह उस रोटी को खिड़की की चौखट पर रखने वाली थी, उसके हाथ कांपने लगे। उसने कहा, 'यह मैं क्या कर रही हूं?'

उसने तुरंत उस रोटी को आग में फेंक दिया और दूसरी रोटी बनाकर महिला ने खिड़की की चौखट पर रख दी। हर रोज़ की तरह कुबड़ा मनुष्य आया और उसने रोटी उठाकर अपने वही शब्द कहे, ''जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा और जो अच्छा काम तुम करोगे वह तुम्हारे पास वापिस आएगा।' यह शब्द कहता हुआ वह अपने रास्ते निकल गया। उस आदमी को नहीं पता था कि महिला के दिमाग में क्या चल रहा है।

हर रोज़ महिला खिड़की की चौखट पर रोटी रखने से पहले अपने बेटे के लिए प्रार्थना करती थी जो किसी दूर जगह गया था अपनी किस्मत को ढूंढने। कई महीनों से महिला को अपने बेटे की कोई खबर नहीं मिली थी। वह उसकी वापसी की प्रार्थना करती रहती थी। उस शाम उसके घर के दरवाज़े पर खटखटाहट हुई। जैसे ही उसने दरवाज़ा खोला वह देखकर आश्चर्य हो गई कि दरवाज़े पर उसका बेटा खड़ा था। वह बहुत दुबला पतला हो गया था, उसके कपड़े फटे हुए थे। वह भूखा था और कमज़ोर हो चुका था। जैसे ही उसने अपनी मां को देखा उसने कहा, 'मां, यह एक प्रकार चमत्कार है कि मैं आपके सामने खड़ा हूं। मैं जब दूर देश में था तो मैं इतना भूखा था कि टूट चुका था। मैं शायद मर जाता लेकिन तभी एक कुबड़ा आदमी मेरे पास से गुजरा। मैंने उससे खाने के लिए भीख मांगी और उसने मुझ पर उपकार करते हुए मुझे पूरी रोटी दे दी। उसने रोटी देते हुए

मुझे कहा, 'मैं यह हर रोज़ खाता हूं। आज तुम्हें इसकी ज़्यादा ज़रूरत है। तुम इसे खा लो।'

जैसे ही मां ने वह शब्द सुने उसका चेहरा पीला पड़ गया। वह दरवाज़े का सहारा लेकर खड़ी हो गई। उसे वह ज़हर वाली रोटी याद आई जो उसने सुबह बनाई थी। अगर उसने वह रोटी को नहीं जलाया होता अगर वह उसके बेटे ने खा ली होती और वह मर चुका होता। उसने तब उन शब्दों के अर्थ को समझा कि 'जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा और जो अच्छा काम तुम करोगे वह तुम्हारे पास वापिस आएगा।'

हमेशा अच्छा काम करते रहो और उसे कभी करने से पीछे मत हटो बेशक तुम्हारे काम की प्रशंसा हो या ना हो।

मकान मालिक अपने नए किरायेदार को मकान दिखलाने के लिए लाया था। लौटते समय उन्होंने फुटपाथ पर एक मरियल से आदमी को कराहते हुए देखा।
तभी किरायेदार मकान मालिक से बोला, 'आप तो कहते थे कि इस इलाके की जलवायु बहुत अच्छी है, और यहाँ कभी कोई आदमी बीमार नहीं हुआ। लेकिन इस आदमी को देखो, क्या हालत हो गई है इसकी?
मकान मालिक बोला- अरे भाई! यह तो इस इलाके का डॉक्टर है, जो भूखा मर रहा है। क्योंकि यहाँ कोई बिमार ही नहीं होता।

शेखचिल्ली के हंगामें

©COPYRIGHT

अरे मुस्सदीलाल क्या बात है, काफी परेशान नज़र आ रहे हो।
क्या बताऊं शेखचिल्ली आज मुझे नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा।
मेरे मालिक ने अपने दस खेतों के अंदर एक सुरंग बनाई है, और मुझे हुक्म दिया है कि कल सुबह होने से पहले यह बिजली की तार सुरंग के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुंच जानी चाहिए।
यह काम नामुमकिन है, रात में सुरंग के अंदर सांप बिच्छू निकल आते है, समझ में नहीं आ रहा क्या करूं??

अरे चिंता छोड़ो मै तुम्हारी परेशानी अभी समाप्त कर देता हूं
अगले ही पल शेखचिल्ली ने एक चूहा पकड़ लिया
अरे यह क्या कर रहे हो
यह चूहा तुम्हारा तार सुरंग के दूसरे कोने तक ले जायेगा
लगता है चूहा रुक गया है, तार आगे नहीं सरक रही है
तुम तार संभालो देखो मै अभी क्या जुगाड़ करता हूं।

कुछ देर बाद
अब इस बिल्ली का कमाल देखो
एक दो तीन
तार खिंच रहा है, लगता है बिल्ली चूहे के पीछे लग गई है।
और अगले ही पल तार बहुत तेज़ गति से सुरंग के अंदर खिंचने लगा
चूहा सुरंग के दूसरी ओर पहुंच चुका है, पूरी तार समाप्त हो गई है।
अब घर जाकर आराम करो।

विराट कोहली

विराट कोहली का जन्म 5 नवंबर 1988 में हुआ। यह एक भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी है जो सन् 2008 की 19 वर्ष से कम आयु वाले विश्व कप क्रिकेट विजेता दल के कप्तान भी रह चुके है। प्रथम श्रेणी क्रिकेट में विराट दिल्ली का प्रतिनिधित्व करते है। विराट ने भारती स्कूल से अपनी शिक्षा हासिल की। उनके पिता प्रेमजी कोहली एक वकील थे। विराट एक मध्यक्रम के बल्लेबाज है और सही हाथ के मध्यम गति की गेंदबाजी कर सकते है। वह इंडियन प्रीमियर लीग में रॉयल चैलेंजर्स बंगलोर के कप्तान है। उन्होंने वेस्ट दिल्ली क्रिकेट अकादमी के लिए भी खेला है। विराट ने भारतीय बल्लेबाज द्वारा सबसे तेज़ शतक का रिकॉर्ड बनाया है। कोहली ने 2008 में अपने एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट की शुरूआत की और 2011 के विश्व कप जीतने वाली भारतीय टीम का हिस्सा बने। एक दिवसीय टीम में नियमित होने के बावजूद, कोहली ने किंग्सटन में वेस्टइंडीज़ के खिलाफ 2011 में अपना पहला टेस्ट खेला था।

साल 2012 में उन्हें आईसीसी ओडीआई प्लेअर ऑफ द ईयर के अवॉर्ड से सराहा गया। स्पोर्ट्स प्रो ने उन्हें विश्व का दूसरा मार्केटेबल खिलाड़ी घोषित किया। नवंबर 2013 में वह पहली बार एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय बल्लेबाज बने। कोहली को बांग्लादेश में टी20 विश्व कप के दौरान मैन ऑफ द टूर्नामेंट चुना गया।

बाल कहानी

भगवान की योजना

एक मशहूर मंदिर में एक झाड़ू लगाने वाला काम करता था। वह बहुत ईमानदार और भक्त था। वह हर रोज़ देखता था कि भगवान के दर्शन करने के लिए रोज़ हज़ारों भक्त आते थे। उसने सोचा कि भगवान सारा समय खड़े होकर अपने भक्तों को दर्शन देते है, तो वह थक जाते होंगे।

एक दिन बड़े भोलेपन से उसने भगवान से पूछा कि क्या वह उनकी जगह एक दिन के लिए ले सकता है ताकि भगवान आराम कर ले। उस मंदिर के भगवान ने जवाब दिया, 'मुझे आराम करने में कोई हर्ज नहीं है। मै तुम्हें मेरे रूप में बदल दूंगा लेकिन तुम्हें एक काम करना होगा। तुम्हें यहां मेरी तरह खड़ा होना पड़ेगा और हर किसी को देखकर मुस्कुराना पड़ेगा। किसी भी चीज़ से पंगा मत लेना और किसी को कुछ मत कहना। याद रखना कि तुम 4भगवान होंगे और तुम्हें विश्वास करना होगा कि मेरे पास हर बात के लिए मास्टर योजना है।' झाड़ू वाला यह करने के लिए मान गया।

अगले दिन झाड़ू वाले ने भगवान की जगह ले ली और तब एक अमीर आदमी आया और भगवान से प्रार्थना करने लगा। उसने अच्छा खासा चढ़ावा चढ़ाया और प्रार्थना की कि उसका व्यापार अच्छी तरह होता रहे। वापिस जाते हुए अमीर आदमी गलती से अपना पर्स वहां भूल गया और उस पर्स में ढेरों रूपये थे। अब बतौर भगवान झाड़ू वाला उस आदमी को वापिस नहीं बुला सकता था तो उसने फैसला किया कि वह खुद पर नियंत्रण रखते हुए शांत रहेगा।

तभी एक गरीब आदमी आया और उसने गुल्लक में एक रूपये का सिक्का डाला और कहा कि भगवान मेरे पास यही है आपको चढ़ाने के लिए। उसने भगवान से प्रार्थना की कि वह उसे इतनी हिम्मत दे कि वह उसकी पूजा करता रहे। उसने भगवान से यह भी कहा कि उसके परिवार को कुछ साधारण चीज़ों की बहुत ज़रूरत है लेकिन उसने अपनी समस्याओं का समाधान भगवान पर छोड़ दिया है। जब उसने अपनी आंखें खोली तो उसने अमीर आदमी का पर्स पड़े हुए देखा। गरीब आदमी ने भगवान की विनम्रता के लिए उन्हें धन्यवाद किया और भोलेपन में वह पर्स उठा लिया। अब यह देखकर भगवान के रूप में झाड़ू वाला कुछ नहीं कह सकता था और उसे सिर्फ मुस्कुराना भी था।

तभी उसके बाद एक नौसैनिक आया। उसने भगवान से अपनी सुरक्षित यात्रा के लिए प्रार्थना की क्योंकि वह लंबे सफर पर जा रहा था। तभी अमीर आदमी पुलिस लेकर आया और कहा कि किसी ने उसका पर्स चुरा लिया है और नौसैनिक को वहां देखते हुए उसने पुलिस से कहा कि वह उसे गिरफ्तार कर ले। क्योंकि अमीर आदमी को लग रहा

था कि नौसैनिक ने उसका पर्स चुराया है। अब भगवान के रूप में झाड़ू वाला कहना चाहता था कि नौसैनिक चोर नहीं है लेकिन वह कुछ नहीं कह सका और बहुत उदास हो गया। नौसैनिक ने भगवान की तरफ देखा और पूछा कि उस जैसे मासूम को किस बात की सज़ा मिल रही है। अमीर आदमी ने भगवान की तरफ देखा और उनका शुक्रिया अदा किया कि उन्होंने चोर को पकड़वाने में उनकी मदद की। यह सब देखकर झाड़ू वाला बर्दाश्त नहीं कर सका और उसने सोचा कि अगर यहां पर असली भगवान भी होते तो वह बीच में ज़रूर कुछ बोलते और उसने बोलना शुरू किया और कहा कि नौसैनिक चोर नहीं है बल्कि एक गरीब आदमी पर्स लेकर गया है। यह सुनकर अमीर आदमी और नौसैनिक दोनों ने भगवान का शुक्रिया अदा किया।

रात को असली भगवान आए और उन्होंने झाड़ू वाले से पूछा कि उसका दिन कैसा था। झाड़ू वाले ने कहा, 'मुझे लगा था कि यह काम आसान होगा लेकिन अब मुझे पता चला कि आपका दिन आसान नहीं होता लेकिन मैंने एक अच्छा काम किया।' उसने भगवान को पूरी कहानी बताई। यह सुनकर भगवान काफी नाराज़ हो गए लेकिन झाड़ू वाले को लगा था कि उसकी बात सुनकर भगवान उसकी प्रशंसा करेंगे कि उसने अच्छा काम किया है।

भगवान ने पूछा, 'तुम योजना पर क्यों नहीं टिके रहे? क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं था। क्या तुम्हें लगता है कि मैं यहां आने वाले लोगों के दिलों को नहीं समझता? अमीर आदमी ने जो चढ़ावा चढ़ाया था वह सब चोरी का पैसा था। उसके पास सिर्फ कुछ पैसे थे और वह चाहता था कि मैं उसे अनगिनत बना दूं। गरीब आदमी द्वारा दिया गया एक सिक्का उसके पास आखिरी था लेकिन उसने मुझे वह विश्वास के साथ दिया। नौसैनिक ने बेशक कुछ गलत नहीं किया था लेकिन अगर वह जहाज पर जाता तो खराब मौसम के कारण मर सकता था और अगर वह गिरफ्तार हो जाता तो वह जेल में होता और प्राकृतिक आपदा से बच जाता। पर्स गरीब आदमी को मिलना चाहिए था क्योंकि वह उसे मेरे काम में लगाता। मैं यह करके अमीर आदमी के कर्म कम करना चाहता था और नौसैनिक को बचाना चाहता था। लेकिन तुमने सब गलत कर दिया क्योंकि तुम्हें लगा कि तुम मेरी योजना जानते हो और तुमने अपनी योजना बना ली।'

भगवान की अपनी योजना होती है और वह सभी के साथ इंसाफ करते है...हमें सिर्फ धैर्य रखना चाहिए।

दो छात्र परीक्षा भवन से लौट रहे थे।
पहला दूसरे से बोला- कितने सवाल हल कर आए?
दूसरा- मैं तो खाली कापी छोड़ आया। और तुम?
पहला- मैंने भी यही किया यार।
दूसरा- अरे यार यह क्या किया तुमने, अब मुझ पर या तुम पर एक दूसरे की नकल करने का मामला चल सकता है।

डा. के.के. अग्रवाल की कलम से...

डा. के. के. अग्रवाल
पद्मश्री एवं डा. बी.सी. रॉय नेशनल अवॉर्डी

चीनी

- सफेद चीनी हल्का ज़हर है।
- अप्राकृतिक चीनी भी बुरी है सिर्फ स्टीविया को छोड़कर जो एक प्रकार के पौधे से मिलने वाली चीनी है।
- कोई भी पदार्थ जिसका अंत ओस से होता है वह एक प्रकार की चीनी है जैसे फलों में मौजूद क्रुकटोस, ग्लूकोस, सुक्रोस और मालतोस।
- खंड मे अच्छा गुण है और खंड सफेद चीनी से अच्छा है।
- ज़्यादा चीनी खाने से बचपने में मोटापा, रक्तचाप की बीमारी और भविष्य में दिल की बीमारी का खतरा बढ़ जाता है।
- जंगली जानवर चीनी नहीं खाते।
- उनको दिल की बीमारी नहीं होती।
- एक नवजात शिशु जब मां का दूध पीता है तो उसमें सफेद चीनी की मात्रा शून्य होती है।
- अगर आप तीन महीने के लिए अपने खाने में से सफेद चीनी की मात्रा को कम कर दे तो आपके खून को इसकी आदत हो जाती है और आपको इसके फायदे दिखने लगेंगे।
- अगर चीनी को चाय में मिलाया जाता है तो उसके स्वास्थ्य संबंधी फायदे खत्म हो जाते है।
- ज़्यादातर सॉफ्ट ड्रिंक्स में 10 प्रतिशत चीनी होती है और उन्हें एक दिन में एक से ज़्यादा नहीं पीना चाहिए।
- बचपन में ज़्यादा चीनी खाने से दांत भी खराब हो जाते है।

बाल कहानी

काला और सफेद

बहुत पहले की बात है जब मै प्राइमरी स्कूल में था तो मेरी मेरे कक्षा के एक लड़के के साथ बहुत बहस हो गई थी। मै यह तो भूल गया हूं कि वह बहस किस बारे में थी लेकिन उस बहस से जो मैने पाठ सीखा, वह मुझे आज भी याद है।

मुझे यकीन था कि मै सही था और वह गलत। और दूसरे लड़के को लगता था कि मै गलत हूं और वह सही है। इसलिए हमारे अध्यापक ने हमें एक बहुत महत्वपूर्ण पाठ सिखाने का फैसला किया। एक दिन कक्षा में हमारे अध्यापक ने हमें कक्षा में सबके सामने खड़े होने के लिए कहा। उन्होंने मुझे अपने टेबल की एक तरफ और दूसरे लड़के को टेबल की दूसरी तरफ खड़े होने का आदेश दिया। अपनी टेबल के बीच में अध्यापक ने एक बहुत बड़ी चकोर आकार की कोई चीज़ रखी। मुझे दिख रहा था कि वह काले रंग की चीज़ थी। अध्यापक ने दूसरे लड़के से पूछा कि इस चीज़ का रंग क्या है, तो उसने जवाब दिया सफेद।

मुझे विश्वास नहीं हुआ कि चीज़ का रंग सफेद कैसे है क्योंकि मुझे तो वह काला दिख रहा था। हमारी वही पर फिर से बहस हो गई और इस बार यह बहस चीज़ के रंग को लेकर थी। फिर मेरे अध्यापक ने मुझे दूसरी तरफ आने के लिए कहा जहां पर वह लड़का खड़ा था और उस लड़के को मेरी जगह पर खड़ा होने का आदेश दिया। हमने अपनी अपनी जगह बदली और अब जब मेरे अध्यापक ने मुझसे चीज़ का रंग पूछा तो मुझे सफेद रंग ही कहना पड़ा। दरअसल उस चीज़ के दो अलग अलग रंग थे और उसकी तरफ से चीज़ का रंग सफेद था और मेरी तरफ से उसका रंग काला था।

हम बहस के दौरान अपने आप को सही समझते है लेकिन हमें दूसरे के नजरिये से भी देखना चाहिए हो सकता है वह सही हो। कभी कभी हमें समस्याओं को दूसरे के नज़रिये से भी देखना चाहिए ताकि हम उसके विचारों को भी समझ सके। इसलिए अगर किसी से बहस शुरू हो जाए तो कुछ पल हमे अपने आप को कहस वाले की जगह उसके नजरिए से भी सोचना चाहिए कहीं मै तो गलत नही?

मूर्खता की सजा

एक गांव में भगवान दास नाम का एक आलसी और अंधविश्वासी आदमी रहता था। वह अपने आप को भगवान का सबसे बड़ा भक्त मानता था और लोगों से यही कहता फिरता था कि किसी को काम धंधा करने की जरूरत नहीं सिर्फ भगवान का नाम लेते रहने से ही सब कुछ मिल जाएगा। गांव वाले उसे कितना समझाते थे कि भीख मांग मांग कर कब तक गुजारा करोगे, कुछ काम करना चाहिए। लेकिन भगवान दास किसी की भी नहीं सुनता था और बस सारा दिन घर पर बैठकर इंतजार करता रहता कि भगवान कब आकर उसका भाग्य खोल देंगे।

एक दिन, बारिश के मौसम में उस गाँव में बाढ़ आ गया तो सरपंच ने ऐलान करवा दिया कि सब लोग गांव खाली करके किसी ऊंची जगह में चले जाए। लोग गांव खाली करके जाने लगे लेकिन भगवान दास घर से नहीं निकला। गाँववालों ने उसे साथ चलने को कहा तो वो बोला, 'मै आप लोगों की तरह मूर्ख नहीं हूं जो घर छोड़ कर भाग जाऊं, मै भगवान का सबसे बड़ा भक्त हूँ, वो मुझे बचा लेंगे।' थोड़ी देर में गाँव के मुखिया ने आकर भगवान दास को बहुत समझाया कि बाढ़ का पानी बढ़ता जा रहा है जल्दी से वह उनके साथ सुरक्षित स्थान पर आ जाए। लेकिन आलसी भगवान दास नहीं माना। जब पानी घर में भर गया तो भगवान दास छत पर चढ़ कर बैठ गया। तभी वहां कुछ लोग नाव लेकर आए भगवानदास को बचाने के लिए लेकिन भगवान दास ने फिर से मना कर दिया और बोले 'ऊपर वाला मुझे बचा लेगा, आप लोग बार बार मुझे तंग करने क्यों आ रहे हो, मै आप लोगों की तरह बेवकूफ नहीं हूँ, मै भगवान का भक्त हूँ।'

थोड़ी देर बाद बाढ़ का पानी और बढ़ गया तो बचाव दल

हेलीकॉप्टर लेकर आ गए और भगवानदास से चलने के लिए कहा, लेकिन इस बार भी उसने इंकार कर दिया। आखिर सब लोग उसे छोड़ कर चले गए। जब बाढ़ का पानी छत तक पहुंच गया तो वो 'बचाओ, बचाओ' चिल्लाने लगा लेकिन कोई नहीं आया बचाने और भगवानदास बाढ़ के पानी डूब कर मर गया। मरने के बाद जब वह ईश्वर के पास पहुंचा तो उसने भगवान से शिकायत करते हुए पूछा, 'प्रभु मै तो इंतजार करता रहा कि आप मेरी मदद करने आएंगे लेकिन आप क्यों नहीं आएं?' तब भगवान ने हंसकर कहा, 'आया तो था तुम्हारी मदद करने, कभी गांव वाले के रूप में, कभी सरपंच के रूप में, कभी नाव वाले के भेष में, कभी हेलीकॉप्टर कर्मी बनकर, लेकिन तुमने ही आने से मना कर दिया। तुमने पहचाना ही नहीं कि ईश्वर कभी भी, किसी भी रूप में सबकी मदद करने आते ही है, चाहे वह इंसान के रूप में हो, प्रकृति के रूप में हो या जीव जंतु के रूप में हो, क्योंकि ईश्वर सबमें विराजमान होता है। इसलिए जो भी विपदा में किसी की मदद करने के लिए आए उसे ईश्वर मानकर उसकी श्रद्धा करना चाहिए, उसकी हँसी नहीं उड़ानी चाहिए। तुम ईश्वर के भक्त नहीं हो सिर्फ अंध विश्वासी हो। तुम्हारी मूर्खता की सजा तुम्हें मिल गई है।'

-सुलेना मजुमदार अरोरा

बगुला और नीली मछली

सुलेना मजुमदार अरोरा

एक नदी के किनारे एक बरगद का पेड़ था। उस पेड़ में एक बगुला रहता था। वह अक्सर नदी के किनारे एक टांग पर खड़ा होकर मछली और केकड़े का शिकार करता था। एक दिन उसने देखा एक सुंदर सी नीली मछली पानी में तैर रही है। बगुले को वह सुंदर मछली बेहद भा गई। उसने मछली से कहा, 'नीली मछली, नीली मछली, क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगी?' नीली मछली ने डरते हुए जवाब दिया, 'लेकिन तुम तो मुझे खा जाओगे, जैसे तुम दूसरी मछलियों को खाते हो।' बगुले ने अपनी एक टांग से कानों को हाथ लगाते हुए कहा, 'ष्मैं दूसरी मछलियां को खाता हूं, लेकिन तुम तो बहुत सुंदर नीली मछली हो, तुम्हें कभी नहीं खाऊंगा। तुम मेरी दोस्त बन जाओ तो मैं कसम खाता हूं कि तुम्हे कभी नहीं खाऊंगा।' नीली मछली खुश हो गई और बगुले की बात मान गई।

अब रोज बगुला पानी में उतरकर नीली मछली के संग खूब खेलता और दोनों घंटों गप्पे लड़ाते और आनंद मनाते थे। उनकी दोस्ती की चर्चा दूर-दूर तक होने लगी और वे दोनों दोस्ती के मिसाल बन गए। लेकिन फिर ऐसा हुआ कि एक दिन बगुले की तबीयत खराब हो गई, वो शिकार नहीं कर पा रहा था। भूख के मारे वह बेहाल था। किसी तरह बगुला नदी में उतरा और नीली मछली को पुकारने लगा। नीली मछली उसकी पुकार सुन कर जैसे ही बगुले के नजदीक आई, बगुला ने झपट्टा मारकर उसे चोंच में दबाना चाहा। लेकिन नीली मछली बेहद फुर्ती के साथ बगुले की पकड़ से निकल भागी और भागती हुई बोली, 'अब मैं कभी तुम्हारे पास नहीं आऊंगी, मेरी तुम्हारी दोस्ती खत्म।' यह सुनकर बगुले को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने नीली मछली से माफी मांगते हुए कहा, 'माफ कर दो मछली रानी, मैं भूखा था इसलिए मुझ से गलती हो गई। अब मैं कभी ऐसी गलती नहीं करूंगा। तुम मेरे पास लौट आओ।'

लेकिन नीली मछली फिर कभी बगुले के पास नहीं आई। बगुला रोज नदी किनारे नीली मछली को पुकारता रहता था। यह देखकर नदी की अन्य मछलियों ने नीली मछली से पूछा कि बार बार माफी मांगने के बाद भी तुम बगुले को क्यों माफ नहीं कर देती और क्यों नहीं दोबारा बगुले की दोस्त बन जाती? तब नीली मछली ने कहा, 'मेरी मां ने मुझे जिंदगी में दो बहुत जरूरी सीख दी है, एक यह कि जो बहुत भूखा हो उसकी नीयत कभी भी पलट सकती है और दूसरा यह कि जिसने दोस्ती और प्यार के नाम पर एक बार धोखा दिया उसपर फिर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। बगुला भूखा भी है और उसने अपनी सबसे प्यारी दोस्त को धोखा भी दिया इसलिए अब कभी मुझे उसपर विश्वास नहीं होगा।'

बाल समाचार

अमेरिकी विश्वविद्यालय द्वारा सी.एम.एस. छात्र को 1,63,000 अमेरिकी डालर की स्कॉलरशिप

सिटी मोन्टेसरी स्कूल, स्टेशन रोड कैम्पस का मेधावी छात्र एकलव्य अग्रवाल, जिसे उच्चशिक्षा हेतु अमेरिका की ड्रेक्सल यूनिवर्सिटी द्वारा 1,63,000 अमेरिकी डालर की स्कॉलरशिप से नवाजा गया है।

सिटी मोन्टेसरी स्कूल, स्टेशन रोड कैम्पस के मेधावी छात्र एकलव्य अग्रवाल को उच्चशिक्षा हेतु अमेरिका की ड्रेक्सल यूनिवर्सिटी द्वारा 1,63,000 अमेरिकी डालर की स्कॉलरशिप से नवाजा गया है। एकलव्य को यह स्कॉलरशिप चार वर्षीय उच्चशिक्षा अवधि के दौरान प्रदान की जायेगी। इसके अलावा, एकलव्य को अमेरिका के नॉक्स कालेज, टेम्पल यूनिवर्सिटी, एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी एवं जार्जिया स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा भी उच्चशिक्षा हेतु चयनित किया गया है। इस प्रकार, सी.एम.एस. के एक और होनहार छात्र ने अपनी लगन, प्रतिभा व शैक्षणिक उत्कृष्टता के दम पर उच्चशिक्षा हेतु विदेश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में चयनित होकर लखनऊ का नाम गौरवान्वित किया है।

सी.एम.एस. के मुख्य जन–सम्पर्क अधिकारी श्री हरि ओम शर्मा ने बताया कि प्रतिवर्ष सी.एम.एस. के 90 से अधिक मेधावी छात्र विश्व के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में उच्चशिक्षा हेतु चयनित होते हैं। इस वर्ष अभी तक सी.एम.एस. के 21 से अधिक छात्र अमेरिका, इंग्लैण्ड, कैनडा, आस्ट्रेलिया, जापान, सिंगापुर, जर्मनी आदि विभिन्न देशों के ख्यातिप्राप्त विश्वविद्यालयों में चयनित हो चुके है, जिनमें से अधिकतर को स्कॉलरशिप प्राप्त हुई है। श्री शर्मा ने आगे कहा कि सी.एम.एस. छात्रों के दृष्टिकोण व्यापक बनाने व उनकी प्रतिभा को प्रोत्साहित करने हेतु सदैव प्रयासरत है और इसी कड़ी में छात्रों को भारत में एवं विदेशों में उच्चशिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान कर रहा है। सी.एम.एस. प्रदेश में एकमात्र एस.ए.टी. (सैट) एवं एडवान्स प्लेसमेन्ट (ए.पी.) टेस्ट सेन्टर है जो उत्तर प्रदेश एवं आसपास के अन्य राज्यों के छात्रों को विश्व के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में स्कॉलरशिप के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने में मदद कर रहा है। इससे पहले, विदेश में उच्चशिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक प्रदेश के छात्रों को सैट परीक्षा के लिए दिल्ली जाना पड़ता था।

(हरि ओम शर्मा)
मुख्य जन–सम्पर्क अधिकारी
सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

MOTU PATLU

Asian Academy Creative Award 2020

National Winner Best Animated Program or Series (2D or 3D)

लोटपोट

Congratulations to -

Maya Digital Studios & Nickelodeon India

By

P. K. Bajaj, Aman Bajaj